समकालीन हिन्दी ग़ज़लों में युगबोध

डॉ. अशोक कुमार यादव
असिस्टेंट प्रोफेसर (VSY)
राजकीय महाविद्यालय पावटा, (राज.)

साहित्य समाज का दर्पण माना जाता है। साहित्य का सृजन अनेक विधाओं में होता है। इसमें ग़ज़ल भी एक काव्यरूप है, जो कविता विधा के अन्तर्गत आती है। हिन्दी में ग़ज़लें लगभग तेरहवीं सदी से प्रचलन में आई लेकिन इनको वास्तविक पहचान आपातकाल के बाद ही मिल पायी। इस दौरान दुष्यन्त कुमार ने अपने समय की परिस्थितियों को अपनी ग़ज़लों का माध्यम बनाया। उन्होंने हिन्दी ग़ज़ल को एक नई दिशा देने का प्रयास किया। दुष्यन्त कुमार की ग़ज़लों के संदर्भ में कहा गया है कि ''दुष्यन्त कुमार ने ग़ज़ल को एक नया मोड़ दिया। उनकी ग़ज़लों में अभिव्यक्त दर्द स्वानुभूत है। ग़ज़ल को आपने हुश्न–इश्क के क्षेत्र से हटाकर आम–आदमी की तकलीफ को व्यक्त करने का इसे माध्यम बनाया।''[1] वास्तव में इस दौरान हिन्दी ग़ज़ल के क्षेत्र में बड़ा व्यापक परिवर्तन हुआ। दुष्यन्त कुमार की इस विचारधारा को अन्य ग़ज़लकारों ने भी अपनाया और इन्हीं से समकालीन हिन्दी ग़ज़ल की परम्परा की शुरुआत मानी। समकालीन हिन्दी ग़ज़लकारों ने भी अपनी ग़ज़लों में युगबोध की अभिव्यक्ति की है। उनकी ग़ज़लों में अपने समय की ज्वलंत समस्याओं एवं घटनाओं का जिक्र देखने को मिलता है। बीसवीं सदी के आठवें दशक में राजनीतिक बर्बरता चरम पर थी। उस समय दुष्यन्त कुमार की ग़ज़लें मील का पत्थर साबित हुई। उन्होंने लोगों की भावनाओं से जुड़े हुए शेर अपनी ग़ज़लों में रखे। उनकी ग़ज़ल का एक अशआर द्रष्टव्य है –

''कैसे मंजर सामने आने लगे हैं,
गाते–गाते लोग चिल्लाने लगे हैं
अब तो इस तालाब का पानी बदल दो
ये कँवल के फूल कुम्हलाने लगे हैं।''[2]

दुष्यन्त कुमार के इन शेरों में परिवर्तन का स्वर स्पष्ट दिखाई देता है, ये युगबोध का स्पष्ट उदाहरण है। इसके बाद मेयार सनेही ने भी अपनी ग़ज़लों में अपने समय की राजनीतिक व्यवस्था का खुलकर विरोध किया है। उन्होंने न सिर्फ विरोध बल्कि सरकारी सिस्टम में अच्छे और ईमानदार लोगों को आगे आने की अपील भी की है। उनकी ग़ज़ल का एक शेर है –

''जमाने को बदलने के लिए कहते हो ताण्डव हो

बुलाओ ऐसे लोगों को जिन्हें कुछ इसका अनुभव हो।''[3]

मेयार सनेही का ये शेर व्यवस्था में बदलाव के साथ–साथ श्रेष्ठ लोगों को सत्ता में आने का संदेश देता है। यह युगबोध का सकारात्मक उदाहरण है। समकालीन हिन्दी ग़ज़लों में राजनीतिक मूल्यों के साथ–साथ सामाजिक मूल्यों का भी जिक्र है। आज शहरीकरण और बाजारीकरण से समाज में काफी परिवर्तन आया है। इसी संदर्भ में चन्द्रसेन विराट कहते हैं कि –

''जिस तरह से गाँव–कस्बों पर शहर हावी हुआ।

आदमी पर आदमी का जानवर हावी हुआ।''[4]

वास्तव में इक्कीसवीं सदी में समाज में बहुत बदलाव देखने को मिलता है। आज के इस शैक्षिक वातावरण में लोग गाँवों से निरन्तर शहरों की ओर पलायन कर रहे हैं। शहरी संस्कृति ने लोगों को उपभोक्तावादी बना दिया है। इस कारण से लोग स्वार्थीपन की प्रवृति के भी हो गए हैं। आज के दौर में सिर्फ स्वार्थ की ही बोलचाल है। इसी संदर्भ में डॉ. दरवेश भारती का एक शेर दृष्टव्य है –

हवा बाजारवादी है चली यारो

कि बनता जा रहा इंसा छली यारो।''[5]

निःसंदेह आज का दौर भूमण्डलीकरण का है। भूमण्डलीकरण के इस दौर में सुख–सुविधाओं को पाने की हौड़ लगी हुई है। सुख–सुविधाओं को पाने के लिए आम आदमी व्याकुल है। भौतिक सुखों की इस हौड़ में इंसान पैसों की तरफ भाग रहा है।

आज के दौर में इंसान का लक्ष्य सिर्फ पैसा कमाना है। उसे रिश्ते–नातों की कोई परवाह नहीं है। इस कारण से हमारे सांस्कृतिक जीवन मूल्य भी पतन पर हैं। इसी संदर्भ में सूर्यभानु गुप्त का एक अशआर है –

''रिश्ते गुज़र रहे हैं, लिये दिन में बतियाँ
मैं बीसवीं सदी की अँधेरी सुरंग हूँ।
मांझा कोई यकीन के काबिल नहीं रहा
तन्हाइयों के पेड़ से अटकी पतंग हूँ''[6]

वास्तव में आज के दौर में रिश्ते–नाते दांव पर लगे हैं। इससे हमारे सांस्कृतिक जीवन मूल्यों का निरन्तर ह्रास हो रहा है। समाज में लोग मंहगाई और बेरोजगारी से हताहत हैं। निरन्तर अमीर व गरीब के बीच फासला बढ़ता जा रहा है। आम आदमी भूख एवं लाचारी का शिकार हो रहा है। इसी संदर्भ में अदम गोंडवी का एक शेर है –

''बेचता यूँ ही नहीं है आदमी ईमान को
भूख ले जाती है ऐसे मोड़ पे इन्सान को''[7]

वास्तव में आज मानवीय मूल्यों का पूरी तरह पतन हो रहा है। अपने समय की इस गम्भीर समस्या का जिक्र समकालीन हिन्दी ग़ज़लकारों ने किया है। आज के समय में इंसान इतना मतलबी हो गया कि वह बिल्कुल इन्सानियत भूला बैठा है। इसी संदर्भ में ज्ञानप्रकाश विवेक कहते हैं कि –

''हो गया कितना विषैला आदमी का आचरण
आदमी से आज मरता जा रहा है आदमी''[8]

निःसंदेह आज का माहौल चिन्ताजनक है। आज के इस बदलाव के दौर में शिक्षा का बड़ा योगदान है। आज की शिक्षा पद्धति भी कहीं न कहीं हमारे संस्कारों को अनदेखा कर रही है। आज की शिक्षा का उद्देश्य सिर्फ नौकरी–पेशा है। नौकरी

पाने की कोशिश में आदमी भ्रष्टाचार को बढ़ावा देता है। इससे योग्य आदमी नौकरी से वंचित रह जाता है। इसी संदर्भ में इंदु श्रीवास्तव का एक शेर है –

''योग्यता रास्ते में भटकती रही

चौखटों में जड़ी डिग्रियाँ रह गई''[9]

वास्तव में यदि हम देखें तो आज योग्यताधारी व्यक्ति नौकरी से दूर है। भ्रष्टाचार एवं बेरोजगारी चरम पर है। आये दिन पेपर लीक हो रहे हैं, इससे मेहनत करने वाले युवाओं के साथ धोखा हो रहा है। समकालीन हिन्दी ग़ज़लों में न सिर्फ मानवीय संवेदनाएं बल्कि प्रकृति एवं पर्यावरण का भी जिक्र देखने को मिलता है। आज के दौर में मनुष्य ने अपनी भौतिक आवश्यकताओं की खातिर प्रकृति एवं पर्यावरण को भी काफी नुकसान पहुंचाया है। इससे हमारा मौसम चक्र भी कहीं न कहीं प्रभावित हुआ है। इसी संदर्भ में विनय मिश्र का एक शेर है –

''मौसम से हरियाली ग़ायब

जीवन से खुशहाली ग़ायब''[10]

भूमण्डलीकरण के इस दौर में प्रकृति एवं पर्यावरण का भी काफी नुकसान हुआ है। वास्तव में आज हम देखें तो वर्षा की मात्रा में भी निरन्तर कमी हुई है। दिनोंदिन प्रकृति का तापमान बढ़ता जा रहा है। पेड़ों की निरन्तर कटाई होने से वनों के क्षेत्र में कमी आई है। लोग अपनी मूलभूत आवश्यकताओं के लिए पेड़ों की अंधाधुंध कटाई कर रहे हैं। इसी संदर्भ में रामचरण 'राग' का एक शेर द्रष्टव्य है –

''दुनिया में जो दुश्मन हैं हरियाली के

गुपचुप पहुँचे उनके लश्कर जंगल में''[11]

निःसंदेह आज का दौर औद्योगीकरण का है। उद्योग–धंधों के विकास कार्यों में प्रकृति एवं पर्यावरण की काफ़ी हानि हुई है। प्राकृतिक चीजों के अंधाधुंध दोहन से भूमण्डल काफी प्रभावित हुआ है। अपने समय की इन गम्भीर समस्याओं को समकालीन हिन्दी ग़ज़लकार अपनी ग़ज़लों में अभिव्यक्त करते हैं। समकालीन हिन्दी

ग़ज़लें युगबोध के यथार्थ से जुड़ी हैं। समकालीन हिन्दी ग़ज़लों में अपने समय की सच्चाई एवं आम आदमी की संवेदनाएं देखने को मिलती हैं। निसंदेह समकालीन हिन्दी ग़ज़लें अपने युगबोध का आईना प्रतीत होती हैं, क्योंकि इनमें अपने समय तथा समाज का यथार्थ अभिव्यक्त किया गया है।

निष्कर्ष

समकालीन हिन्दी ग़ज़लों में युगबोध की यथार्थ अभिव्यक्ति देखने को मिलती है। समकालीन हिन्दी ग़ज़लकार अपने समय तथा समाज की प्रत्येक घटनाओं को बड़ी गम्भीरता के साथ अपनी ग़ज़लों में अभिव्यक्त कर रहे हैं।

संदर्भ सूची

1. हिन्दी ग़ज़ल और ग़ज़लकार, डॉ. मधु खराटे, पृ. 117
2. साये में धूप, दुष्यन्त कुमार, पृ. 14
3. समकालीन हिन्दी ग़ज़ल पहचान और परख, डॉ. साएमा बानो, पृ. 362
4. साठोत्तरी हिन्दी ग़ज़ल, डॉ. मधु खराटे, पृ. 59
5. हिन्दी ग़ज़ल की परम्परा, हरेराम समीप, पृ. 113
6. समकालीन हिन्दी ग़ज़लकार : एक अध्ययन, हरेराम नेमा 'समीप', पृ. 121
7. हिन्दी ग़ज़ल के नवरत्न, डॉ. मधु खराटे, पृ. 102
8. हिन्दी ग़ज़ल और ग़ज़लकार, डॉ. मधु खराटे, पृ. 192
9. अष्टछाप, सं.–नचिकेता, पृ. 188
10. विनय मिश्र का रचना कर्म : दृष्टि और मूल्यांकन, सं.–श्रीधर मिश्र, 81
11. उम्मीद का मौसम, रामचरण 'राग' पृ. 31